मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

MTT–043

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.टी.टी.-043 : अनुवाद सिद्धात और सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद परंपरा

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. 'अनुवाद' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ स्पष्ट करते हुए 'अनुवाद और रूपांतर' पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 20
2. अनुवाद की सीमाएँ और अननुवाद्यता का अर्थ स्पष्ट करते हुए भाषा की प्रकृति के स्तर पर इनकी चर्चा कीजिए। 20
3. अनुसृजन से क्या अभिप्राय है ? अनुसृजन के महत्व की व्याख्या कीजिए। 20
4. भारतीय अनुवाद परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले प्रमुख भाष्य ग्रंथों का संक्षेप में परिचय दीजिए। 20

5. प्रमुख आधुनिक पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों का वर्णन कीजिए। 20

6. पाश्चात्य वाङ्मय में अनुवाद की महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए। 20

7. "उपनिवेशकालीन भारतीय अनुवाद परंपरा का राष्ट्रवादी स्वरूप" विषय पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 20

8. भरतीय भाषाओं से सिंधी में अनुवाद की परंपरा पर प्रकाश डालिए। 20

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : $10\times2=20$

(क) भाषा : संरचनावादी और उत्तर-संरचनावादी अवधारणा

(ख) संस्कृत-अरबी अनुवाद केंद्र

(ग) तेजस्वी निरंजना का अनुवाद चिंतन

(घ) सिंधी साहित्य के प्रारंभिक काल में अनुवाद परंपरा

× × × × ×